

होने के कारण व्यवहार के अयोग्य, 4. अप्रयुक्त।

अव्यष्टिगत वि. (तत्.) जो एक इकाई या एक व्यक्ति (व्यष्टि) विशेष से संबंधित न हो, सामूहिक, समष्टिगत।

अव्यसन वि. (तत्.) 1. व्यसन मुक्त, व्यसन रहित 2. दुर्गुण से रहित पुं. (तत्.) व्यसन का न होना, व्यसनमुक्ति विलो. व्यसन।

अव्याकरणिक वि. (तत्.) जो व्याकरण सम्मत न हो, जो व्याकरण के नियमों के अनुसार न हो।

अव्याकरणिकता स्त्री. (तत्.) व्याकरण-सम्मत न होने की स्थिति या भाव।

अव्याकृत वि. (तत्.) 1. जो व्याकृत अर्थात् विशिष्ट या वियुक्त न हो 2. अविकृत 3. अपृथक्कृत, अप्रकट, गुप्त 4. जो कारण रूप में न हो पुं. वेदांतशास्त्रानुसार अप्रकट बीज रूप विलो. व्याकृत।

अव्याख्यात वि. (तत्.) 1. जिसे स्पष्ट न किया गया हो 2. व्याख्याहीन विलो. व्याख्यात।

अव्याख्येय वि. (तत्.) 1. जिसकी व्याख्या न की जा सके, जिसे व्याख्या की जरूरत न हो 2. सरल विलो. व्याख्येय।

अव्याघात वि. (तत्.) 1. व्याघातशून्य, जिसे रोका न जा सके, बेरोक, अबाध, अवरोध-रहित 2. लगातार विलो. व्याघात।

अव्याज वि. (तत्.) 1. निष्कपट 2. छल-छद्म से रहित 3. स्वाभाविक 4. अकृत्रिम अर्थ. व्याज रहित पुं. (तत्.) छल-छद्म का अभाव।

अव्यापक वि. (तत्.) 1. सीमित, संकुचित 2. जिसका व्यवहार छोटे क्षेत्र या छोटी कालावधि में ही होता हो 3. जो सर्वत्र न हो।

अव्यापन्न वि. (तत्.) 1. जो दुर्भाग्यग्रस्त, विफल या मृत न हो 2. अविक्षिप्त 3. जीवित।

अव्यापार वि. (तत्.) 1. व्यापार-शून्य 2. बेकाम पुं. (तत्.) 1. परिश्रम का अभाव 2. उद्यम या

कार्य का अभाव 3. निठल्लापन 4. बिना लाभ का काम विलो. व्यापार।

अव्यापी पुं. (तत्.) 1. जो सर्वत्र व्याप्त न हो 2. जो सब जगह न हो 3. जो अन्यत्र न हो।

अव्याप्त वि. (तत्.) 1. जो हर जगह व्याप्त या प्रभावी न हो 2. परिच्छिन्न विलो. व्याप्त।

अव्याप्ति स्त्री. (तत्.) 1. व्याप्ति का अभाव, लागू न होने की स्थिति 2. न्याय. लक्ष्य पर लक्षण का न घट पाना 3. परिभाषा में दिए गए सभी लक्षणों का परिभाषित शब्द या उदाहरण में न दिखाई पड़ना।

अव्याप्य वि. (तत्.) 1. जो व्याप्त न हो सके 2. जो समग्र पर लागू न हो।

अव्यावृत वि. (तत्.) जिसका क्रम न टूटा हो 2. जिसमें कोई परिवर्तन न हुआ हो, ज्यों का त्यों 3. निरंतर, सतत, लगातार, अटूट।

अव्याहत वि. (तत्.) 1. अबाधित, बेरोक 2. अप्रतिस्द्ध, व्याघातरहित 3. अखंडित, अटूट पुं. (तत्.) 1. सत्य 2. अखंडनीय वक्तव्य।

अव्युत्पन्न वि. (तत्.) 1. जिसकी व्युत्पत्ति व्याकरण से सिद्ध न हो सके, व्युत्पत्तिरहित 2. अनभिज्ञ, अनुभव-शून्य 4. अकुशल 5. अनाड़ी।

अव्रण वि. (तत्.) 1. जो क्षत न हो, अक्षत 2. बिना घाव का 3. जो घाव से खराब न हुआ हो।

अव्रत वि. (तत्.) 1. व्रतहीन 2. जिसका व्रत नष्ट हो गया हो 3. नियम रहित 4. शास्त्र विहित नियमों, कृत्यों का पालन न करने वाला पुं. 1. जैन शास्त्रानुसार व्रत के कृत्यों की संपन्नता 2. व्रत-त्याग, व्रत का अभाव।

अव्वल वि. (अर.) 1. प्रथम, पहला 2. उत्तम, श्रेष्ठ पुं. 1. प्रारंभ 2. आदि मुहा. अव्वल आना या रहना- प्रतियोगिता में सर्वप्रथम आना।

अशंक वि. (तत्.) शंका रहित, निश्चंक, निर्भय।

अशंकता स्त्री. (तत्.) 1. शंकाहीनता 2. निर्भयता।